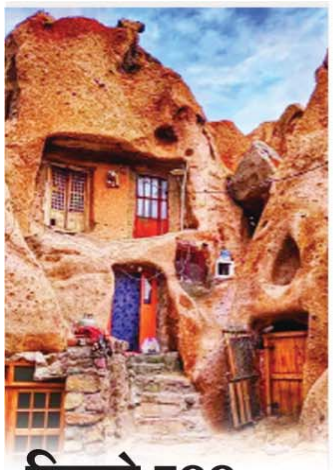

पिछले 700 सालों से घोंसलों में रह रहे हैं इस गांव के लोग

हर किसी का सपना अच्छे और आलीशान घर में रहने का होता है. हर कोई चाहता है उसका अपना घर हो तथा उसमें खूब सारी जगह हो. हर कोई चाहता है कि उसका अपना घर ऐसी जगह हो जहां हरियाली हो तथा वहां सूरज की रोशनी आती रहे. जिससे कि वह अपने घर में सुकून से रह सके. हालांकि इस धरती पर एक ऐसा गांव है. जहां के लोग पिछले 700 सालों से घर में नहीं बल्कि घोसले में रहते हैं. यह घर एकदम चिड़ियों के घोंसलों की तरह दिखता है. आप जानकर हैरान रह जाएंगे कि ये लोग एक दो साल से नहीं, बल्कि कई पीढ़ियों से ऐसे घरों में रह रहे हैं. ऐसा गांव ईरान में है. ईरान के कंदोवन गांव के लोग घोंसलानुमा घरों में रहते हैं. अपनी अजीबोगरीब परंपरा के लिए ये गांव और यहां रहने वाले लोग दुनियाभर में मशहूर हैं. इस गांव के लोग पक्षियों की तरह घोंसले बनाकर रहते हैं. आप भले ही इन घरों को आम घर समझते हैं, लेकिन इस घर की खासियत जानकर आप हैरान रह जाएंगे.

इस घर में सर्दियों में गर्मी और गर्मियों में ठंडी रहती है.

ये घर देखने में भले ही अजीब लगें, लेकिन रहने में काफी आरामदायक है. यह गांव 700 साल पुराना है. यहां रहने वाले लोग न हीटर का इस्तेमाल करते हैं, न ही एसी का इस्तेमाल करते हैं. यहां गर्मी के मौसम में ठंडी रहती है, जबकि सर्दी में गर्मी रहती है. अब आप सोच रहे होंगे कि इन घरों का निर्माण कैसे और क्यों हुआ? यहां रह रहे लोगों के पूर्वजों ने मंगोलों के हमलों से बचने के लिए ये घर बनाए थे. कंदोवन के प्रारंभिक निवासी यहां हमलावर मंगोलों से बचने के लिए आए थे. वे छिपने के लिए ज्वालामुखी चट्टानों में ठिकाना खोदा करते थे तथा वहीं उनका स्थायी घर बन जाता था. दुनियाभर में यह गांव अपने अनोखे घरों के लिए जाना जाता है.

ब्राजील के फर्नांडो डी नोरोन्हा द्वीप समूह पर हर दिन 420 लोगों को ही जाने की है इजाजत

ब्राजील के फर्नांडो डी नोरोन्हा द्वीप समूह के सफेद रेत वाले तटों और हरे-भरे पहाड़ी जंगलों तक सभी नहीं पहुंच सकते। यहां आने की चाहत रखने वालों की कमी नहीं है, लेकिन रोजाना सिर्फ 420 मेहमानों को ही फर्नांडो डी नोरोन्हा आने की इजाजत मिलती है। ब्राजील के उत्तर-पूर्वी तट से साढ़े तीन सौ किलोमीटर दूर स्थित इन 21 खूबसूरत द्वीपों के तीन चौथाई हिस्से को 1988 में संरक्षित राष्ट्रीय समुद्री वन एवं अभयारण्य घोषित किया गया था। मुख्य द्वीप 28.5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। इसका निर्माण ज्वालामुखीय चट्टानों से हुआ है। इसके आसपास 20 छोटे द्वीप हैं।

ये द्वीप हमेशा ऐसे नहीं थे। 16वीं सदी में इसे सबसे पहले पुर्तगाल के समुद्री यात्री फर्नांडो डी नोरोन्हा ने खोजा था। डच और पुर्तगाल दोनों देशों की सेनाएं इसका इस्तेमाल करती थीं, लेकिन 1700 ईस्वी के आसपास इसे जेल में बदल दिया गया था। 20वीं सदी के मध्य तक यहां के मुख्य द्वीप का इस्तेमाल कैदखाने की तरह होता था जहां ब्राजील के सबसे खतरनाक अपराधियों को रखा जाता था। कातिलों, चोरों, बलात्कारियों और राजनीतिक कैदियों को सजा काटने के लिए इस द्वीप पर भेजा जाता था। इतिहासकार ग्रेजिले रोड्रिग्स कहती हैं, लोग फर्नांडो डी नोरोन्हा आते हैं जन्नत के एक हिस्से पर जश्न मनाने के लिए, लेकिन किसी जमाने पर यह बेरहम अपराधियों की जगह होती थी। फर्नांडो डी नोरोन्हा को अब भी एकांत की जगह माना जाता है, हालांकि अब यह उतना अलग-थलग नहीं है जितना पहले कभी हुआ करता था। रोड्रिग्स कहती हैं, 1822 में जब ब्राजील ने पुर्तगाल से आजादी का एलान किया तो इस द्वीप के लोगों को उसके बारे में दो साल बाद पता चला। जन्नत जैसी खूबसूरती के लिए मशहूर इस द्वीप को ब्राजील के लेखक गैस्टाओ पेनाल्वा ने फोरा डो मुंडो कहा था, जिसका मतलब है इस दुनिया से बाहर। फर्नांडो डी नोरोन्हा को यूनेस्को ने वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया है। ब्राजील तट से दूर यह एकमात्र द्वीप है जहां आबादी रहती है।

रोड्रिग्स कहती हैं, आज की तकनीक और इंटरनेट होने के बावजूद यह एक दूर की जगह है। मेरे परदादा यहां 1946 में आए थे। जब उन्होंने लोगों को इस बारे में बताया तो उन्होंने कहा था- क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? क्या तुम वहां जहां जा रहे हो जहां कुछ भी नहीं है, जो शापित है? अलग-थलग होने के कारण ही 18वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक इस द्वीप का इस्तेमाल कैदखाने की तरह होता रहा। अच्छे चाल-चलन वाले कैदी अपने परिवार वालों को भी यहां भेजने की गुजारिश कर सकते थे। वे आम कैदियों के सेल से अलग रहते थे। यहां की जेल 1957 में बंद कर दी गई, लेकिन कुछ पूर्व कैदी यहां से कभी वापस नहीं गए। उन्होंने इस द्वीप को ही घर बना लिया जहां आज भी उनके वंशज रहते हैं। फर्नांडो डी नोरोन्हा आने वाले मेहमान आज भी उस कैदखाने के खंडहरों को देख सकते हैं, जिन पर अब हरी बेलों ने कब्जा जमा लिया है।

डोमिको आल्वेस कोर्डीरो और डेविड आल्वेस कोर्डीरो सगे भाई हैं। वे इस द्वीप के सबसे पुराने और बुजुर्ग बाशिंदे हैं। उनका जन्म इसी द्वीप पर हुआ था। उनके पिता ने 20वीं सदी की शुरुआत में यहां सजा काटी थी और फर्नांडो डी नोरोन्हा में ही जेल अधिकारी बनकर रह गए। पुराने एलबम को पलटते हुए डोमिको कहते हैं, मेरे पिता एक अपराधी थे और उनको नोरोन्हा भेजा गया था। मेरे दादाजी के खेत थे इसलिए उनको यहां चरवाहे का काम करने के लिए भेजा गया था। कैदी यहां सूरज निकलने से लेकर शाम ढलने तक काम करते थे। जहाजों के रुकने और माल चढ़ाने-उतारने के काम आने वाले सभी तटों पर पहरा होता था। कैदी उन समुद्र तटों पर नहीं जा सकते थे। उनमें से कुछ जेल के मछुआरे होते थे। बाकी कैदी मछुआरे नहीं होते थे, जैसे मेरे पिता। लेकिन उनको मछली पकड़ना अच्छा लगता था। कैदियों और उनके परिवार वालों को द्वीप पर होने वाली गतिविधियों में शरीक होने के लिए इजाजत लेनी पड़ती थी। डेविड आल्वेस कोर्डीरो कहते हैं, जब मैं सात साल का था तब मैंने उनके साथ पहली बार मछली पकड़ी थी। उन दिनों मैं खुद से तट तक नहीं जा सकता था। आज डेविड को लगता है कि आजाद इंसान के लिए नोरोन्हा से बेहतर जगह दूसरी कोई नहीं है।

मायरा फ्लॉर भी यहीं रहती हैं। इन दिनों वह गर्भवती हैं और समुद्र तट पर टहलने आई हैं। इस द्वीप पर कोई मैटर्निटी हॉस्पिटल नहीं है इसलिए उनको बच्चे को जन्म देने के लिए ब्राजील के मेनलैंड जाना होगा। मेरा परिवार यहां के सबसे बड़े और पुराने परिवारों में से एक है। मेरी दादी के भाई यहां सेना के लिए काम करने आए थे। कुछ दिनों बाद मायरा की दादी और दादा भी अपने बच्चों के साथ यहां चले आए। मायरा को यहां की शांति सबसे अच्छी लगती है। यहां कोई ट्रैफिक नहीं है। यहां मुझे दूसरी जगहों की तरह दो घंटे के लिए ट्रैफिक में नहीं फंसना पड़ता।

यह द्वीप अटलांटिक महासागर में बड़े ही रणनीतिक महत्व का है। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका ने यहां अपना सैनिक अड्डा बनाया था। नोरोन्हा के चारों ओर पन्ने जैसी चमकदार गर्म पानी है, जहां झींगा मछलियां, कछुए, उष्णकटिबंधीय मछलियां और डॉल्फिन बहुतायत में मिलती हैं। नोरोन्हा ब्राजील की सबसे पसंदीदा जगहों में से एक है और इसे दक्षिण अमेरिका में डाइविंग और सर्फिंग के लिए सबसे अच्छी जगह माना जाता है। ग्रेजिले रोड्रिग्स कहती हैं, नोरोन्हा दूरदराज की जगह है, फिर भी सुकून के लिए यहां रहना खास है। मायरा को भी लगता है कि यदि उनको कहीं और रहना पड़ता तो वह नोरोन्हा की खूबसूरती को मिस कर देतीं। मैं जानती हूं कि धरती पर कई खूबसूरत जगहें हैं लेकिन मुझे इससे सुंदर दूसरी कोई और जगह नहीं लगती।

इंग्लैंड के जंगलों में दुनिया का पहला ओपन थिएटर

इग्लैंड के साउथवॉल्ड के जंगलों में दुनिया का पहला ओपन थिएटर बन रहा है, जो इस माह के अंत तक पूरा हो जाएगा। पूरी तरह से लकड़ी से तैयार हो रहे इस थिएटर में 350 लोगो की क्षमता होगी। यहां दिन में पेड़ों की छाया और रात में खुले आसामान के नीचे कार्यक्रम किए जा सकेंगे। इसे खासतौर से पर्यावरण प्रेमियों के लिए ही तैयार किया जा रहा है। यहां थिएटर आर्टिस्ट अपनी अदाकारी दिखाएंगे। साथ ही समय समय पर पर्यावरण के लिए पेड़ों के महत्व को भी समझाएंगे। इस थिएटर का नाम द थोरिंगटन थिएटर रखा गया है। यहां नाटक और म्यूज़िकल कान्टेस्ट आयोजित किए जाएंगे। इस थिएटर को बनाने वाले चार्लोट बान्ड ने बनाया कि इस थिएटर को बनाने में किसी तरह के पेड़ का नुकसान नहीं हुआ है। उन्होंने बताया कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यहां दो बम गिरे थे, जिसकी वजह से यहां गड्ढा बन गया है और ज्यादा पेड़ न होने के कारण उन्हें थिएटर के लिए जगह मिल गई।

आखिर क्यों ट्रेन के पीछे एक्स का निशान होता है?

X का मतलब होता है कि यह ट्रेन का आखिरी डिब्बा है और ट्रेन के आखिरी डिब्बे पर X के साथ एलवी लिखने का मतलब होता है 'लास्ट व्हीकल'। अगर आप ध्यान देंगे तो एलवी हमेशा एक्स के निशान के साथ लिखा होता है। अगर किसी ट्रेन के पीछे यह निशान नहीं बना होता है, तो इसका अर्थ होता है कि कोई डिब्बा ट्रेन से अलग हो गया है। जिस कारण दुर्घटना होने के सम्भावना ज्यादा रहता है इसलिए दुर्घटना को रोकने के लिए यह निशान बनाया गया है। आपने जरूर देखा होगा की रेलवे क्रोसिंग पर गार्ड ट्रेन को हरी झंडी दिखाता है साथ ही वह यह भी सुनिश्चित करता है कि ट्रेन के लास्ट डब्बे में X का निशान बना हो। रात के समय ये सुनिश्चित करने के लिए क्रोस के निशान के नीचे एक लाल बत्ती लगी होती है जिसे देख कर रात में भी अंदाजा लगाया जाता है कि ट्रेन सेफ है।

लोंगवा गांव क्यों है अनोखा?

भारत एक ऐसा देश है जहां के लगभग हर गांव में आपको कुछ अलग रिवाज या कुछ रोचक तथ्य जानने को मिलेंगे। जैसे-किसी गांव में सांप की पूजा होती है, किसी गांव में सिर्फ पुरुष ही खाना बनाते हैं तो कोई गांव काला जादू के लिए जाना जाता है।

भारत में एक ऐसा ही गांव है जिसका नाम है लोंगवा। इस गांव के बारे में कहा जाता है कि यहां के लोग खाते हैं भारत में और सोने के लिए दूसरे देश में पहुंचते हैं। इस लेख में आपको भारत के लोंगवा गांव के बारे में कुछ रोचक तथ्यों के बारे में बताने जा रहे हैं।

लोंगवा गांव कहां है?

इस अनोखे गांव के बारे में बताने से पहले यह जान लेते हैं कि यह कहां है। आपको बता दें कि यह गांव भारत के नागालैंड और म्यांमार की सीमा पर स्थित है। नागालैंड के मोन जिले में स्थित यह गांव भारत का आखिरी गांव भी माना जाता है। (गुजरात में है अफ्रीकी गांव)

इस अनोखे गांव के बारे में एक नहीं बल्कि कई रोचक तथ्य है। कहा जाता है कि सीमा पर होने के चलते इस गांव का आधा हिस्सा भारत में पड़ता है और आधा हिस्स म्यांमार में पड़ता है। इसके अलावा लोंगवा गांव के बारे में कहा जाता है किसी-किसी घर का किचन भारत में स्थित है और सोने के लिए म्यांमार में जाते हैं। यही नहीं भारत के कुछ लोग खेती करने म्यांमार में जाते हैं तो कुछ म्यांमार से भारत में खेती करने आते हैं।

क्या सच में इस गांव के मुखिया की 60 पत्नियां हैं?

इस अनोखे गांव के बारे में अगर सबसे अधिक कुछ चर्चित है तो वो है इस गांव का मुखिया। कहा जाता है कि इस गांव का जो व्यक्ति मुखिया है उनकी 1-2 या 3 नहीं बल्कि 60 पत्नियां हैं। इस मुखिया के बारे में यह भी बोला जाता है कि नागालैंड के साथ-साथ अरुणाचल प्रदेश और म्यांमार के लगभग 70 से अधिक गांवों में उनका प्रभुत्व है।

क्या इस गांव के लोग म्यांमार की सेना में शामिल हैं?

लोंगवा गांव के बारे में कहा जाता है कि यहां के लोग भारतीय सेना के साथ-साथ म्यांमार की सेना में भी शामिल है। सीमा पर मौजूद होने के बाद कई लोगों के पास दोनों ही देशों में रहने का निवास स्थल है जिसके चलते सेना में शामिल होते रहते हैं। हालांकि, इस गांव के बारे में एक विचित्र कहानी भी है कि इस गांव के लोगों में खोपड़ी पहने का रिवाज है जिसे देखने के बाद एक आम व्यक्ति डर जाता है। आपको बता दें कि इस गांव में घूमने के लिए एक से एक बेहतरीन जगहें भी हैं।